राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **स्वार्थे सत्येव कोऽपि,कमपि पृच्छति नान्यथेत्यनुभवोऽस्ति नः।**
ईदृक् - स्वार्थवृत्तिस्तु , न कुत्रापि गुरुदेव ! पठिता श्रुता वा ॥64॥

स्वार्थ होने पर ही कोई किसी को पूछता है, अन्यथा नहीं । यह हमारा अनुभव है । ऐसी स्वार्थ-वृत्ति तो कहीं भी हे गुरुदेव ! न पढ़ी गयी अथवा सुनी ही गयी है।

In my experience, people are asking about each other only because of selfishness. Oh, Gurudev! We have never heard or listened about such kind selfishness.

देवतानामवतार, - भूः सञ्जाताऽद्य हन्त ! अद्यासुराणाम् ।
नहि तान् निहन्तुं परं,कृष्णायते कोऽपि स्वयमिह जनो हा ! ॥65॥

हा ! दुःख हैं, देवताओं के अवतार की भूमि आज असुरों की बन गयी है । पर उनका वध करने के लिए कोई भी स्वयं यहाँ कृष्ण नहीं बनता है, दुःख है।

Yes! It's a pity that the land of gods and avatars became the land of demons. But nobody is becoming Krishna to fight them.

सर्वभूतेष्वात्मवत् , परद्रव्येषु लोष्टवत् स्वमातृवच्च ।
पर-स्त्रीषु भावना, यदि स्यात् तर्हि भवेत् ससुखं शान्तिः ॥66॥

सभी प्राणियों में स्वयं के समान पराये पदार्थों में मिट्टी के ढेले के समान और परायी स्त्रियों में अपनी माता के समान लोगों की भावना हो जाए तो सुख - सहित शान्ति हो जाए।

There will be peace and happiness if we treat all like we treat ourselves, other people's things like heaps of sand and other people women as our mothers. |66|

युवशक्तिरदमनीया, युवभ्यस्त्वाजीविकां दत्त्वा तेषाम् ।
शक्तिस्त्वुपयोज्या, राष्ट्राभ्युदयीय - कार्येष्वविलम्बा हि ॥67॥

युवक-युवतियों की शक्ति अदमनीय होती है । युवकों-युवतीयों को जीविका देकर उनकी शक्ति का यहाँ राष्ट्र के अभ्युदय के सम्बन्धित कार्यो में निश्चित रूप से अविलम्ब उपयोग करना चाहिए।

The energy of young men and women should be respected. By giving them direction, their energy should be used for the betterment of the nation, without any delay.

अन्यथा त्वसामाजिक, - तत्त्वैराकृष्टा युवानः प्रतुदन्ति ।
समग्रमपि राष्ट्रमिह , स्वकीयैर्विध्वंसकारि-गतिविधिभिर्हि ॥68॥

नहीं तो, असामाजिक तत्त्वों के द्वारा आकृष्ट की गयी युवक-युवतियाँ अपनी विध्वंसकारी गतिविधियों से सारे ही राष्ट्र को यहाँ उत्पीड़ित कर देती हैं।

Otherwise, young men and women will be attracted by the anti-social elements, and through the acts of vandalism destroy the whole nation.

जनता नेच्छति राष्ट्रे, राष्ट्रे कदापि युद्धं सुख-शान्ति-नाशि ।
केवलं तच्छासका , एव स्वार्थाय युद्धमुत्पादयन्ति ॥69॥

राष्ट्र में सुख शान्ति को नष्ट कर देने वाले युद्ध को जनता कभी नहीं चाहती। केवल उस राष्ट्र के शासक ही स्वार्थ के लिए युद्ध उत्पन्न करते हैं।

People do not want war, which destroys peace and happiness. Only selfish rulers start them. (or National leaders start the wars for selfish purposes.)

युद्धे सैनिका एव, निज-प्राणान् ददति स्वराष्ट्र - रक्षायै ।
स्वपदस्थाः शासकास्तु, निर्बाधं मोमुद्यन्ते निश्चिन्ताः ॥70॥

युद्ध से अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए सैनिक अपने प्राण देते हैं । अपने पद पर विराजमान शासनकर्ता तो बिना किसी बाधा के निश्चिन्त रूप से खूब मौज करते हैं।

In the war, soldiers give their lives to protect the country while rulers are enjoying without any disturbances.

(क्रमशः)